संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हो। हमारे प्यारे पाठकों को हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के सबसे शक्तिशाली और सबसे अतुलनीय नाम से अभिवादान करती हूँ। पिछला महीना एक धन्य महीना रहा है जिसमें मैंने व्यक्तिगत रूप से प्रभु के शक्तिशाली हाथ का अनुभव किया है। सारी महिमा यीशु की है जिनकी करुणा मेरे जीवन और मेरे निकट और प्रिय लोगों के जीवन पर रहती है!

याकूब 4:8 ''परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगो, अपने हृदय को पवित्र करो।'' हमें हमेशा प्रभु के करीब आने की कोशिश करनी चाहिए और उसके बाद ही वह हमारे करीब आएंगे। जब हम प्रभु से दूर जाने की कोशिश करते हैं, तो वह हमें आसानी से त्याग नहीं देता। वह हमें अलग–अलग तरीकों से अपनी कृपा दिखाते है ताकि हम उनके प्यार को समझ सकें। प्रभु यीशु हमारे लिए परमेश्वर पिता के साथ मध्यस्त करते हैं और हमारे जीवन और दिलों में काम करने के लिए कुछ और समय के लिए अनुरोध करते हैं। अपने पिता से समय मांगते हुए, यीशु प्रार्थना करते है, ''पिता, मैं अपने लोगों के दिल को अधिक से अधिक जीवित वचन के साथ खोदूंगा और यह सुनिश्चित करूँगा कि वे परमेश्वर के राज्य के लिए फलदायी हों। लेकिन अगर मेरे लोग अपने पापी तरीकों से नहीं फिरते हैं और वचन नहीं सुनते हैं और मेरी आज्ञाओं पर ध्यान नहीं देते हैं, तो मैं उन्हें निकाल दूंगा और उन्हें आग में नष्ट कर दूंगा।''

एक ऐसे जीवन का क्या उपयोग है जहाँ हम प्रभु से दूर हैं? यह एक निरर्थक जीवन है, जब हम प्रभु से दूर भागने का चुनाव करते हैं। इस वचन को स्पष्ट रूप से समझें: ''प्रभु के निकट आएँ और वह आपके समीप आएंगे।'' हमें अपने भीतर प्रभु के करीब और करीब आने की इच्छा हमेशा होनी चाहिए। हमें उनके मंदिर में आने का उत्साह होना चाहिए। हमें उनके जीवित वचन को सुनने की प्यास होनी चाहिए। जब परमेश्वर हमारे भीतर इच्छा, उत्साह, विश्वास, प्रेम और प्यास देखते है, तो हमारा परमेश्वर हमारे लिए सब कुछ करेंगे और हमें अधिक मात्रा में आशीर्वाद देंगे, क्योंकि प्रभु के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। इसलिए याद रखें, पहला कदम हमेशा 'हम' के साथ शुरू होता है!

यीशु एक दृष्टांत में कहते हैं लूका 15:20 में ''तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला : वह अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा।'' बेटे ने केवल अपने पिता के पास आने के बारे में सोचा और उसे शुरुआती कदम पिता के पास जाने के लिए उठाने पड़े,

लेकिन जब पिता ने उसे दूर से देखा, तो वह उसे गले लगाने के लिए अपने बेटे की तरफ दौड़ा। आज, उसी वचन का यहाँ प्रचार किया गया है; हम प्रभु के जितने निकट आते हैं, वह हमसे भी अधिक निकट आएंगे! हालांकि, पहला कदम उठाने का फैसला हमारे भीतर से आना चाहिए।

इसलिए प्यारे भाइयो और बहनो, अब और देर न करें। प्रभु के करीब आएं। प्रभु इंतजार कर रहे है की आप प्रभु से प्रेम करे और उनकी आज्ञा अपने पूरे ह्रदय, आत्मा और मन से माने ताकि वह आपको भरपूर आशीर्वाद दे सके।

जब तक हम फिर से मिले, प्रभु की सेवा में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

2 तीमुथियुस 1: 16 ''उनेसिफुरुस के घराने पर प्रभु दया करे, क्योंकि उसने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया और मेरी जंजीरों से लज्जित न हुआ।'' उनेसिफुरुस और उसके परिवार ने प्रेरित पौलुस को दिलासा और प्रोत्साहित किया जब वह कैद में था। इसलिए प्रेरित पौलुस ने उनेसिफुरुस के लिए दो बार प्रभु की कृपा के लिए प्रार्थना की और उसे सलाह दी। 2 तीमुथियुस 1: 14–18 ''14 और पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी धरोहर की रखवाली कर। 15 तू जानता है कि आसियावाले सब मुझ से फिर गए हैं, जिनमें फूगिलुस और हिरमुगिनेस हैं। 16 उनेसिफुरुस के घराने पर प्रभु दया करे, क्योंकि उसने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया और मेरी जंजीरों से लज्जित न हुआ। 17 पर जब वह रोम में आया, तो बड़े यत्न से ढूँढ़कर मुझ से भेंट की 18 प्रभु करे कि उस दिन उस पर प्रभु की दया हो और जो जो सेवा उसने इफिसुस में की है उन्हें भी तू भली भाँति जानता है।'' आइए हम पढ़ें मत्ती 5: 7 ''धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।'' इस दुनिया में कई मूर्ख हैं, जो इस 'सत्य' को नहीं जानते हैं, कि दयावन्त वे हैं, जो प्रभु से दया पाते हैं। यीशु ने 'अमीर आदमी और लाजर' के बारे में एक दृष्टांत में बात की, लाजर धनवान आदमी के घर के सामने पड़ा था। वह गरीब, बीमार और जरूरतमंद था। लेकिन धनवान आदमी को उस पर दया नहीं आई। इन दोनों के मरने के बाद, हम जानते हैं कि लाजर सीधे अब्राहम की गोद में चला गया, जबकि धनवान आदमी नरक की आग में जल गया। हमें प्रभु के इस रहस्य को जानना चाहिए। जिस तरह प्रेरित पौलुस ने उनेसिफुरुस के बारे में बात की, की कैसे उसने जेल में अपने समय के दौरान उसे किस तरह प्रोत्साहित किया था, इस प्रकार पौलुस ने प्रभु से प्रार्थना की कि वह और उसके परिवार पर प्रभु की दया प्राप्त हो। फिर से पढ़ते हैं, मत्ती 5: 7 कहता है ''धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।'' इस प्रकार क्योंकि अमीर आदमी को बीमार और जरूरतमंद लाजर पर दया नहीं की थी, मृत्यु के बाद अमीर आदमी को भी प्रभु की दया प्राप्त नहीं हुई, जबकि वह पानी की एक बूंद के लिए प्यासा था, उसे यह भी दिया न गया था। लूका 16: 22 – 31 ''22 ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर अब्राहम की गोद में पहुँचाया। वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया, 23 और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आँखें उठाईं, और दूर से अब्राहम की गोद में लाजर को देखा। 24 तब उसने पुकार कर कहा, 'हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी उँगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।' 25 परन्तु अब्राहम ने कहा, 'हे पुत्र, स्मरण कर कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएँ ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएँ : परन्तु अब वह यहाँ शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। 26 इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है कि जो यहाँ से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें; और न कोई वहाँ से इस पार हमारे पास आ सके।' 27 उसने कहा, 'तो हे पिता, मैं तुझ से विनती करता हूँ कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज, 28 क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं; वह उनके

सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएँ।' 29 अब्राहम ने उससे कहा, 'उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उनकी सुनें।' 30 उसने कहा, 'नहीं, हे पिता अब्राहम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाए, तो वे मन फिराएँगे।' 31 उसने उससे कहा, 'जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौभी उसकी नहीं मानेंगे'।'' यहाँ हम देखते हैं कि लाजर सीधे स्वर्ग में गया अब्राहम की गोद में और धनवान आदमी नरक की आग में चला गया।

यह हमारे जीवन में भी सच है, अगर हम इस जीवन में दया नहीं दिखाते हैं, तो हमें भी दया नहीं दी जाएगी। हमारे लिए इस धरती पर खुद को बदलना बहुत जरूरी है, इसी जीवन में। मृत्यु के बाद, पश्चाताप करने में बहुत देर हो जाएगी। यहां हम देखते हैं कि धनवान आदमी मृत्यु के बाद बदलना चाहता था, इसलिए वह मदद के लिए चिल्ला रहा था और अब बदलना चाहता था। मगर बहुत देर हो चुकी थी। अब्राहम ने उससे वचन 26 में कहा ''26 इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है कि जो यहाँ से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें; और न कोई वहाँ से इस पार हमारे पास आ सके।'' इस प्रकार, यह हमारे लिए अब बदलाव का समय है, इस समय के बाद हमें प्रभु से दया नहीं मिलेगी। इस प्रकार, इस दुनिया में खुद को बदलने की जरूरत है, न कि मृत्यु के बाद। हम यह भी देखते हैं कि धनवान आदमी अपने पांच भाइयों को इस धरती पर बचाना चाहता था, वह उन्हें सच्चाई से परिचय कराना चाहता था, इस प्रकार उसने अब्राहम से उसे जाने देने की और उन्हें सच्चाई के बारे में बताने के लिए अनुरोध किया। जिसके लिए अब्राहम ने कहा वचन 29–30 ''29 अब्राहम ने उससे कहा, 'उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उनकी सुनें।' 30 उसने कहा, 'नहीं, हे पिता अब्राहम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाए, तो वे मन फिराएँगे।'' अंत समय में, जब हम अच्छा करने की इच्छा रखते हैं, तो हमारा स्वास्थ्य और शक्ति हमें अनुमति नहीं देता, हमें अपने जीवन को बदलने के बारे में सोचने के लिए भी बहुत देर हो जाएगी। इसलिए, हमें उन पर दया करनी चाहिए जब हम दूसरों की मदद कर सकते हैं जब हमारे पास मदद करने की क्षमता हो। यदि हम दूसरों पर दया नहीं करते हैं, तो हमें भी दया नहीं दी जाएगी।

नीतिवचन 18:23 ''निर्धन गिड़गिड़ाकर बोलता है, परन्तु धनी कड़ा उत्तर देता है।'' गरीब आंसू और विनम्रता से प्रार्थना करता है, जबकि अमीर घमंडी और असभ्य होता है। आज, हमारे प्रभु के सामने हम सभी को गरीब और जरूरतमंद होना चाहिए, क्योंकि हम सभी उनके सामने उनसे कुछ पूछने और उनसे कुछ लेने के लिए आए हैं। हमें विनम्र होना चाहिए, हमें दोहरे दिमागवाले नहीं होना चाहिए। अमीर सोचते हैं कि वे बुद्धिमान हैं और उनसे अधिक कोई बुद्धिमान नहीं है। अगर आज यही हमारा रवैया है, तो हमने जीवन में कुछ भी नहीं सीखा है। लेकिन, अगर हमारे दिल में हम सोचते हैं कि ''आज तक, मुझे कुछ नहीं मिला है'', तो याद रखें कि हमें बहुत कुछ दिया जाएगा। प्रभु ने कहा है ''आप राजा, याजक और चुने हुए पीढ़ी हैं''। यह हमारे लिए प्रभु का आशीर्वाद है, लेकिन अगर हमने अभी भी अपने जीवन में यह सब हासिल नहीं किया है तो हम शापित हैं। हमें हमेशा प्रभु के सामने विनम्र रहना चाहिए और सोचना चाहिए कि हमने जीवन में कुछ भी हासिल नहीं किया है, तभी सब कुछ हमारे लिए दिया जाएगा। जो लोग सोचते हैं कि वे प्रभु के सामने महान हैं, प्रभु उनके बारे में कम सोचते हैं और उन्हें प्रभु की कृपा कभी नहीं मिलेगी! इस प्रकार, हमें हमेशा प्रभु के सामने विनम्र रहना चाहिए। जब हमारे हाथ में पैसा होता है तो हमें दूसरों की मदद करने में संकोच नहीं करना चाहिए, याद रखें कि प्रभु हमें हमेशा देख रहे है। इस दुनिया में, यह अमीर हैं जो गर्व करते हैं और गरीब हमेशा विनम्र होते हैं। जब हमें लगता है कि हम प्रभु के सामने 'शून्य' हैं, प्रभु निश्चित रूप से हमें ऊपर उठाएंगे।

1 इतिहास – अध्याय 14 में हमने पढ़ा है, कि कैसे दाऊद ने हर समय प्रभु की सलाह मांगी। राजा बनने के बाद भी, वह परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता था और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार शादी की थी। वह हमेशा मदद और सलाह के लिए प्रभु की ओर देखता था। अगर प्रभु ने कहा कि बाएं मुड़, तो वह बाएं मुड़ जाता था। यदि परमेश्वर कहता कि वह दाएँ मुड़, तो वह दाएँ मुड़ जाता था। जब प्रभु ने उससे कहा ''तुम एक गड़गड़ाहट की आवाज़ सुनोगे, तभी युद्ध के लिए तैयार हो जाना'' उसने प्रभु की हर आवाज का पालन किया। क्योंकि दाऊद ने हमेशा प्रभु की आज्ञा का पालन किया, इसलिए उसे हर युद्ध में जीत का आशीर्वाद मिला, जिसका उसे जीवन में सामना करना पड़ा था। सिर्फ इसलिए कि वह इस्राएल का राजा बना, उसे उस पर कोई गर्व नहीं था। एक बार जब हम जानते हैं कि दाऊद ने पाप किया था, उसके बाद उसने पश्चाताप किया और भजन संहिता 51 की पुस्तक लिखी। सचमुच, दाऊद ने सच्चे मन से प्रभु के सामने पश्चाताप किया और जब प्रभु से पुकारा ''मैं आपके सामने एक बेकार और टुटा हुआ पात्र हूँ'', तो उन्होंने तुरंत प्रभु की दया प्राप्त की। उसके बाद, प्रभु ने उसके लिए गवाही दी और कहा कि ''दाऊद एक ऐसा मनुष्य है जो मेरे मन के अनुसार मिल गया है।'' इसी तरह, प्रभु को भी हमारे भीतर यह विनम्रता दिखाई देना चाहिए और हम से प्रसन्न होना चाहिए। उपरोक्त दृष्टांत में, धनवान आदमी और लाजर, हम जानते हैं कि लाजर ने कितने दीनता से धनवान आदमी से पानी और भोजन के लिए कहा होगा, लेकिन धनवान आदमी ने इस अनुरोध पर ध्यान देने से इनकार कर दिया। जब धनवान आदमी जोरदार संगीत के साथ अपने जश्न का आनंद ले रहा था, तो पानी और भोजन के लिए गरीब लाजर के अनुरोध को धनवान आदमी ने नजरअंदाज कर दिया। हां, इस प्रकार जब दोनों की मृत्यु हुई और हम दोनों का अंत जानते हैं। इस प्रकार, हमारे लिए इस दुनिया में परिवर्तन करना बहुत महत्वपूर्ण है।

आइए हम पढ़ते हैं नीतिवचन 19: 17 ''जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह यहोवा को उधार देता है, और वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा।'' प्रभु मनुष्य का कर्जदार नहीं है, वह देनेवाले के विचारों और लेनेवालों के विचारों को भी जानता है। प्रभु निश्चित रूप से अपने समय में देने वाले को पुरस्कृत करते हैं। याकूब 2: 13 ''क्योंकि जिसने दया नहीं की, उसका न्याय बिना दया के होगा : दया न्याय पर जयवन्त होती है।'' प्रभु मनुष्य का कर्जदार नहीं है, वह देने वाले के विचारों और लेनेवालों के विचारों को भी जानता है। प्रभु निश्चित रूप से अपने समय में देने वाले को पुरस्कृत करते हैं। याकूब 2: 13 ''क्योंकि जिसने दया नहीं की, उसका न्याय बिना दया के होगा : दया न्याय पर जयवन्त होती है।'' जो लोग दया नहीं दिखाते हैं, प्रभु उसी तरह न्याय करेंगे। प्रभु के वास्तविक निर्णय से पहले, जब हमारे कार्यों का न्याय किया जाएगा, हर अच्छे काम को 'अनुग्रह अंक' दिए जाएंगे। यद्यपि हमारे जीवन का न्याय किया जाएगा, अच्छा और बुरा, फिर भी हम उस दया के लिए 'अनुग्रह अंक' प्राप्त कर सकते हैं उस दया से जो इस दुनिया में लोगों को दिखाया गया है। हम सभी अत्यधिक पापी हैं और हम सभी ने उनकी महिमा को बहुत कम समझा है जो की हमारे ही गलती के कारण हैं। लेकिन, अगर हमने इस धरती पर लोगों पर दया की है तो हमें भी 'अनुग्रह अंक' प्राप्त करने के लिए माना जाएगा। अगर हमने ज़रूरतमंद लोगों की मदद की है, तो यह स्वर्ग में दर्ज होगा। हम पापी हो सकते हैं लेकिन फिर भी दया के हमारे कार्यों को 'अनुग्रह अंक' के लिए माना जाएगा, यह यीशु का निर्णय है। हमारे जीवन में, हमारे बच्चे प्रभु से कोई अच्छाई पाने के लायक नहीं हो सकते हैं, क्योंकि उनके बचपना के कारण, अवज्ञा या उनके गलत कामों के कारण। उनके माता–पिता की भलाई या उनके पास्टर जी की प्रार्थना के कारण वे प्रभु से दया प्राप्त करते हैं। हाँ, हमारे हाथों में आज वचन है, प्रभु ने हमें अपने जीवन में याजक और भविष्यद्वक्ताओं की तरह आशीर्वाद दिया है, हमें उनके द्वारा प्रचारित वचन को सुनना चाहिए और इसे स्वीकार करना चाहिए और हमारे

जीवन को बदलना चाहिए। हमें यकीन है, हमारे बीच जो लोग पहले मर चुके हैं और पीड़ित हैं, वे भी हमारे बारे में सोच रहे होंगे – कि हमारे लोग यहां न आएं और न ही पीड़ित हों और उन्हें वचन सुनें और उनके बेहतर के लिए उनका जीवन बदलने के लिए मेहनती बनें। इसलिए, हम आज धन्य हैं कि हम परमेश्वर के धन्य वचन को सुन सकें और इस तरह हमें एक अंधे, गूंगे और बहरे जीवन का नेतृत्व नहीं करना चाहिए। बल्कि हमें दया का वचन प्राप्त करना चाहिए और प्रभु की कृपा प्राप्त करनी चाहिए। हममें से कोई भी 100 प्रतिशत पवित्र और परिपूर्ण नहीं है, फिर भी प्रभु की दया हमें उसका अनुग्रह प्रदान करेगी।

पुराने नियम में, हमने यूसुफ और याकूब के विपरीत जीवन को देखा है। दोनों ने प्रभु की दया प्राप्त की, क्योंकि वे प्रभु के सामने शुद्ध और पवित्र थे। आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 39: 21 ''पर यहोवा यूसुफ के संग संग रहा और उस पर करुणा की, और बन्दीगृह के दारोगा के अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई।'' यहाँ हम देखते हैं कि कैसे प्रभु ने यूसुफ पर दया की और उसे जेल के रक्षक, एक पत्थर दिल इंसान की कृपा भी मिली। ये कैदी प्रभु के भय में रहते थे और पवित्र जीवन जीते थे। इस प्रकार, प्रभु ने उन्हें पत्थर दिल आदमी, जेल के रखवाले से दया पाने के लिए अनुग्रहित किया। दो कैदियों ने एक भयानक सपना देखा, इस प्रकार वे भय से चपेट में आ गए। उन्होंने सपने को नहीं समझा, इसलिए यूसुफ ने उन्हें सपना समझाया और उन्हें सांत्वना दी। जैसा कि हम पढ़ चुके हैं मत्ती 5: 7 ''धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।'' जेल में भी, यूसुफ ने कैदियों पर दया की और उन्हें सपने की व्याख्या बताई और उन्हें सांत्वना दी। इस व्याख्या के कारण, यूसुफ को परमेश्वर की दया, कृपा प्राप्त हुई। इस प्रकार फिरौन ने उसे उसके बगल में स्थान दिया। हमने शास्त्र में देखा है कि यूसुफ को पाप करने और जीवन में अमीर बनने का अवसर मिला, लेकिन वह प्रभु से डरता था और पाप करने से बहुत दूर भागता था।

उसने खुद को परमेश्वर के सामने पवित्र और निर्दोष रखा। जब हमारे पास भी परमेश्वर की सेवा करने का उत्साह है और हर स्थिति में उनका नाम गौरवान्वित करते है, तो प्रभु भी हमें एक चौकी पर, उसकी दाईं ओर रखेंगे। आइए पढ़ें 1 पतरस 2: 10 ''तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है।'' एक बार हम उनकी सभा नहीं थे, लेकिन अब हम उनकी सभा हैं। उस समय हमें उनकी दया नहीं मिली, लेकिन अब उनकी सभा होने के नाते हमने उनकी दया को प्राप्त कर लिया है। आज हम जानते हैं, हम पर उनकी दया और कृपा है। इस प्रकार, हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम ने जो प्रभु का प्रेम प्राप्त किया है उसे आसपास के अन्य लोगों को बताये जो हमारे आसपास है। हमें उनके प्रेम और दया और अनुग्रह को साझा करना चाहिए, हम उनकी सभा हैं। जब हम अपने पापों में इस दुनिया में नाश हो रहे थे, यह उस समय है जब हम यीशु मसीह से मिले, जिन्होंने हमें प्यार किया और हमें उनके बहुमूल्य लहू से धोया और शुद्ध किया, हम बच गए। आज, हम यह नहीं कह सकते हैं कि हम कुछ भी नहीं जानते हैं, क्योंकि हमें उनकी कृपा, दया मिली है और हम उनका परिवार, उनकी चुनी हुई पीढ़ी हैं। प्रभु आज भी हमसे कहते हैं ''दूसरों पर दया करो और कृपा करो जैसे मैंने तुम पर किया है, इस तरह तुम्हारा प्याला उमड़ेगा और कभी नहीं ख़तम होगा ''। दूसरी ओर, अगर हम याकूब के जीवन को देखें, तो वह एक धोखेबाज था, उसने अपने भाई के साथ एक समय के भोजन के लिए जन्मसिद्ध अधिकार के लिए धोखा दिया। दूसरे पल में, उसने अपने पिता को धोखा देकर उसका आशीर्वाद प्राप्त किया। बाद में हम देखते हैं, उसने अपने ससुर को भी धोखा दिया और उसकी दोनों बेटियों से शादी की और उसे धोखा देकर उसकी सारी संपत्ति छीन ली। याकूब एक अमीर आदमी बन गया, लेकिन उसके पास जो कुछ भी था वह सब कुछ उसका नहीं था, जो उसके भाई,

उसके पिता और उसके ससुर को धोखा देकर धन प्राप्त किया हुआ था। फिर भी, याकूब को परमेश्वर प्यार करते थे, क्यों? क्योंकि सारी दौलत के बावजूद उसने अपने पवित्र आशीर्वाद के लिए पूरी रात प्रभु से लड़ाई की। प्रभु ने उसके प्रेम को देखा और उसका वह उत्साह जो प्रभु की दया और कृपा के लिए लड़ रहा था वह प्यार भी देखा। इस प्रकार प्रभु ने याकूब का नाम धोखेबाज से बदलकर 'इस्राएल' कर दिया। यह वही प्रभु है जो हमें 'अनुग्रह अंक' भी देगा, कोई भी उसे रोक नहीं सकता है। हालाँकि हम महान पापी हो सकते हैं, प्रभु हमारे दिलों को देख रहे हैं, वह हमें उसी के अनुसार आशीर्वाद देंगे।

नीतिवचन 6: 30–31 ''30 जो चोर भूख के मारे अपना पेट भरने के लिये चोरी करे, उसको तो लोग तुच्छ नहीं जानते; 31 तौभी यदि वह पकड़ा जाए, तो उसको सातगुणा भर देना पड़ेगा; वरन् अपने घर का सारा धन देना पड़ेगा।'' उदाहरण की तोर पे, अगर कोई पेड़ से पपीता चुराता है, और उसके पेड़ के नीचे बैठता है और उसे खाता है, तो कोई भी कुछ नहीं कहेगा, इसके बजाय वे उस पर दया करेंगे और कहेंगे ''वह भूखा था इसलिए उसने उसे खा लिया''। लेकिन अगर वह 2– 4 पपीते अपने थैले में ले जाता है और उसे लेकर भाग जाता है, अगर वह पकड़ा जाता है, तो उसे चुराने के लिए दंडित किया जाता है। इसलिए याद रखें, हमारी भूख के लिए हम जो कुछ भी करें, उसे माफ कर दिया जाएगा। लेकिन अगर हम चुराते हुए पकड़े जाते हैं, तो हमें सात गुना अधिक चुकाना होगा। याकूब का धोखा देने वाला स्वभाव इस तरह का था, हालाँकि उसने सभी को धोखा दिया था लेकिन वह अभी भी प्रभु के प्यार का प्यासा था जिसकी उसे कमी थी। उत्पत्ति 32: 10 ''तू ने जो जो काम अपनी करुणा और सच्चाई से अपने दास के साथ किए हैं, कि मैं जो अपनी छड़ी ही लेकर इस यरदन नदी के पार उतर आया, और अब मेरे दो दल हो गए हैं; तेरे ऐसे ऐसे कामों में से मैं एक के भी योग्य तो नहीं हूँ।'' वचन 22–29 ''22 उसी रात वह उठा और अपनी दोनों स्त्रियों, और दोनों दासियों और ग्यारहों लड़कों को संग लेकर घाट से यब्बोक नदी के पार उतर गया। 23 उसने उन्हें उस नदी के पार उतार दिया, वरन् अपना सब कुछ पार उतार दिया। 24 और याकूब आप अकेला रह गया; तब कोई पुरुष आकर पौ फटने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा। 25 जब उसने देखा कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता, तब उसकी जाँघ की नस को छुआ; और याकूब की जाँघ की नस उससे मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई। 26 तब उसने कहा, ''मुझे जाने दे, क्योंकि भोर होने वाला है,'' याकूब ने कहा, ''जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा। 27 और उसने याकूब से पूछा, ''तेरा नाम क्या है?" उसने कहा, ''याकूब।'' 28 उसने कहा, ''तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल अर्थात्, ईश्वर से युद्ध करनेहारा होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है। 29 याकूब ने कहा, ''मैं विनती करता हूँ, मुझे अपना नाम बता।" उसने कहा, ''तू मेरा नाम क्यों पूछता है?'' तब उसने उसको वहीं आशीर्वाद दिया।'' इस तरह से याकूब का नाम 'धोकेबाज़' से बदलकर 'इस्राएल' कर दिया गया। इस प्रकार, प्रभु ने याकूब को भरपूर आशीर्वाद दिया। यहां तक कि अगर हमारे पास याकूब की तरह जीवन जीने के लिए समान उत्साह है, तो प्रभु हमारे जीवन को भी आशीर्वाद देंगे और आशीषित करेंगे।

नीतिवचन 10: 22 ''धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है, और वह उसके साथ दुःख नहीं मिलाता।'' जो लोग प्रभु पर भरोसा करते हैं, यह प्रभु की दया है जो उन्हें बचाएगी। हम कभी भी अपने दर्द का एहसास नहीं करेंगे, क्योंकि प्रभु हमारी देखभाल करेगा, हमारे विपरीत, बुरे लोगों को उनके दर्द और पीड़ाओं से दण्डित किया जाएगा। भजन संहिता 33 : 22 ''हे यहोवा, जैसी तुझ पर हमारी आशा है, वैसी ही तेरी करुणा भी हम पर हो।'' जिस तरह हमने प्रभु में अपना विश्वास रखा है, उसी तरह उनकी दया और कृपा भी हम पर होगी। जितना अधिक हम प्रभु के साथ रहने का प्रयास करेंगे, अत्यधिक प्रभु से हमारा आशीर्वाद प्राप्त होगा। निर्गमन 20: 6

''और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हज़ारों पर करुणा किया करता हूँ।'' हम जानते हैं कि कैसे परमेश्वर ने अब्राम को वह सब छोड़ने के लिए कहा था, और उस भूमि पर जाने के लिए कहा जिसे परमेश्वर ने उसे दिखाया था। उत्पत्ति 12: 1 ''यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने देश, और अपने कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।'' उत्पत्ति 22 : 1 –2 ''1 इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने अब्राहम से यह कहकर उसकी परीक्षा की, ''हे अब्राहम!'' उसने कहा, ''देख, मैं यहाँ हूँ। 2 ''उसने कहा, ''अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा; और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढ़ा।'' परमेश्वर ने अब्राहम के प्रेम का परीक्षण की। अब्राहम ने परमेश्वर के वचन को स्वीकार किया और उसका पालन किया। प्रभु जब हम से कुछ भी करने के लिए कहते हैं हमें बर्बाद करने के लिए कभी नहीं कहते हैं। बल्कि, वह हमेशा हमें हिलाना, दबाना और अतिप्रवाह करना चाहता है। प्रभु हमें भी परखेंगे लेकिन कब पता नहीं ? लेकिन अगर हम उनके प्रति आज्ञाकारी हैं जैसे अब्राहम था, तो हम भी धन्य होंगे। परमेश्वर अब्राहम से कुछ नहीं चाहते थे, लेकिन वह अब्राहम के प्रति उनके प्रेम का परीक्षण कर रहे थे। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम को और उसकी आनेवाली पीढ़ियों को भी आशीर्वाद दिया। हम यह भी जानते हैं कि आदम और हव्वा प्रभु की एक छोटी सी आज्ञा को भी न रख पाए और न ही उनके आज्ञाकारी बन पाए। हमारा जीवन ऐसा नहीं होना चाहिए, हमारे हाथों में एक छोटी सा काम दिया गया हो या बड़ा काम। याद रखें प्रभु हमारे ऊपर देख रहे हैं कि हम इसे कैसे पूरा करते हैं। यदि हम परमेश्वर के वचन के आज्ञाकारी हैं तो हम धन्य हो जाएंगे।

यह संदेश हमारे जीवन में आशीर्वाद लाए।

पास्टर सरोजा म।